This question paper contains 3 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

7754 **A**

M.A. (एम. ए.)/II
HINDI (हिन्दी)
Group (A) - Bhaktikaleen Kavya
वर्ग (क) - भक्तिकालीन काव्य
Paper 13 - Sant Kavya Dhara
प्रश्न-पत्र 13 - सन्त काव्य धारा
(प्रवेशवर्ष 2000 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक** : 50

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट : प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक एम. ए. हिन्दी परीक्षा वर्ग 'ब' (स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग एवं नॉन-फार्मल सैल आदि) के परीक्षार्थियों के लिए मान्य हैं। वर्ग 'अ' (पूर्व नियमित विद्यार्थियों) के लिए इन अंकों का समानुपातिक पुनर्निर्धारण परीक्षाफल तैयार करते समय किया जाएगा।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7

(क) मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ।
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ।।
मतु देखि भूला बीसरै तेरा चिति न आवै नाउ।

हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ।
मैं आपणा गुरू पूछि देखिआ अवरू नाही थाउ।।

अथवा

बिरहनि कौं सिंगार न भावै। है कोई ऐसा राम मिलावै।।
विसरे अंजन मंजन चीरा। विरह विथा यहु व्यापे पीरा।।
नौ सत थाके सकल सिंगारा। है कोई पीर मिटावन हारा।।
देह गेह नहिं सुधि सरीरा । निसदिन चितवत चात्रिग नीरा।।
दादू ताहि न भावै आंन। राम बिना भई मृतक समान।।

(ख) माटी को पुतरा कैसे नचतु है। 7
देखै देखै सुनै बोलै दउरियो फिरतु है।।
जब कछु पावै तब गरबु करतु है।
माइआ गई तब रोवनु लगतु है।।

मन बच क्रम रस कसहि लुभाना।
बिनसि गइआ जाइ कहुं समाना ।।
कहि रविदास बाजी जगु भाई।।
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई।।

अथवा

पंडित सो जु पढ़ै यह पोथी।
जामैं ब्रह्म बिचार निरंतर और बात जानौं सब थोथी।।
पढत पढत केते दिन बीते बिद्या पढी जहां लग जो थी।
दोष बुद्धि जौ मिटी न कबहुं यातैं और अविधा को थी।।
लाभ पढे कौ कछू न हूवौ पूंजी गई गांठि की सो थी।
सुन्दरदास कहै संमुझावै बुरौ न कबहूं मानौं मो थी।।

2. गुरुनानक देव की भक्ति की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

गुरुनानक देव की काव्य-भाषा की रचनात्मकता पर विचार कीजिए।

3. निर्गुण भक्तिधारा में दादू दयाल का महत्व प्रतिपादित कीजिए। 12

अथवा

पठित कविताओं के आधार पर दादू दयाल के समाज विषयक विचारों की समीक्षा कीजिए।

4. रैदास की भक्ति-भावना का वैशिष्ट्य उद्घाटित कीजिए। 12

अथवा

सुन्दरदास 'संत तो ये थे ही, पर कवि भी थे।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।